thearyasamaj.org

वर्ष-११ अंक-४
२७ दिसम्बर २०१४

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14
एक प्रति- २०-०० रू.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

thearyasamaj.org

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक
वर्ष-११ अंक-४
२७ दिसम्बर २०१४
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४९,११३
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३७९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

संपादकीय	4
सिर्फ भाग्य भरोसे नहीं	7
श्राद्ध और तर्पण	10
स्वामी श्रद्धानन्द	15
भाई परमानन्द	18
आर्य समाज निपानिया कलां में आर्य समाज भवन हेतु शिलान्यास	20
वेद कथा एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ	24

जनवरी माह के पर्व, त्यौहार, दिवस, जयंतियाँ

01	ईसवीं नववर्ष प्रारंभ
12	स्वामी विवेकानंद जयंती, युवा दिवस
14	मकर संक्रांति, भीष्म पितामह जयंती
15	थल सेना दिवस
23	सुभाष चन्द्र बोस जयंती
24	बसंत पंचमी, सरस्वती जयंती, कवि निराला जयंती
26	गणतंत्र दिवस
28.	लाला लाजपतराय जयंती

thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

सारा झगड़ा सम्प्रदायों का है, धर्म का नहीं

उत्तर प्रदेश की घटना को लेकर विशेषकर संसद में टी. वी. चैनल्स पर पूरे देश में जंग छिड़ी हुई है। कारण है कुछ मुस्लिम मजहब के मानने वालों का हिन्दू हो जाना। विवाद में एक–दूसरे पर आक्षेप लगाए जा रहे हैं। यह पहली बार नहीं हो रहा, लालच, भय, सेवा, शिक्षा, क्रूरता के द्वारा एक सम्प्रदाय के लोगों को उसके सम्प्रदाय से हटाकर दूसरे सम्प्रदाय में दीक्षित करना, अपनी संख्या की वृद्धि करने का प्रयास कोई नया नहीं है, किन्तु यह सनातन भी नहीं है। यह महाभारत काल के पश्चात धर्म के नाम पर मजहबों, सम्प्रदायों का जन्म होता गया, तभी से यह सुनने व देखने को मिला।

पारसी, जैन, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख इन सबकी स्थापना का आधार कोई महापुरूष रहा है। इसलिए इन सभी तथाकथित धर्मों का आधार कोई महापुरूष ही है उनके पहले यह मान्यता (मजहब) अस्तित्व में नहीं थी। यह भी सत्य है कि इनका अस्तित्व महाभारत काल अर्थात 5000 से साढ़े पांच हजार वर्ष पूर्व तक नहीं था।

इनकी स्थापना के पूर्व अर्थात महाभारत काल के पूर्व विश्व इतिहास में ऐसा उदाहरण नहीं है, जिसमें धर्म के नाम पर एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में मिलाने का (धर्मान्तरण करने का) कोई प्रयास किसी के द्वारा किया गया हो।

हॉ, सज्जन, दुर्जन, दैत्य, देवता, पापी, पुण्यात्मा, में भेद अवश्य था परन्तु यह पहचान व्यक्ति के गुण कर्म स्वभाव के अनुसार थी, इसका आधार जाति, देश, सम्प्रदाय नहीं हुआ करता था। जो श्रेष्ठ गुणों को धारण करते थे जिनके आचार–विचार व्यवहार धर्मानुकूल होते थे, उन्हें श्रेष्ठ (आर्य) और जो पतित होते उन्हें दस्यू, राक्षस (अनार्य) के नाम से संबोधित किया जाता था।

इसलिए ईश्वर, धर्म, जाति, मजहब के नाम पर विवाद नहीं होते थे। सारे संसार के व्यक्ति केवल एक धर्म को मानने वाले होते थे। यह धर्म सृष्टि के प्रारंभ में मानव उत्पत्ति के साथ ही प्राप्त हुआ था। इस वर्तमान सृष्टि को उत्पन्न हुए 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख व 53 हजार वर्ष हो चुके। यह संख्या मात्र किसी भावनात्मक या अनुमान से नहीं की गई।

thearyasamaj.org

यहां यह विचारणीय बात है कि इन सम्प्रदायों के स्थापित होने के पूर्व इस प्रकार की घटनाएं क्यों नहीं होती थी ? क्या 5000 वर्ष के पूर्व के व्यक्ति धर्म को नहीं मानते थे ?

इसका एक ही उत्तर हो सकता है यह कि पहले धर्म ही था, सम्प्रदाय नहीं थे, इसलिए धर्मान्तरण, साम्प्रदायिक हिन्सा, जाति, मजहब के नाम पर अलगाव नहीं था।

आज भी धर्म की वास्तविकता को समझ जाएं तो सारे विवादों का अन्त हो जाये।

इसलिए पहले धर्म और सम्प्रदाय के अन्तर को समझना होगा, सम्प्रदायों में धर्म के कुछ अंश और किसी महापुरूष के विचारों का कुछ भाग दोनों का सम्मिश्रण पाया जाता है। धर्म का स्वरूप कर्तव्य पारायणता, नैतिकता, सत्याचरण, परोपकार सबकी उन्नति में है। धर्म सब मानवों के लिए है मानवीय समाज में कुछ तपके के लिए नहीं है। किन्तु सम्प्रदाय कुछ विशेष समुदाय तक सीमित रह गया। यदि सम्प्रदायों में धर्म की बातों को ही महत्व दिया जाता तो संसार स्वर्ग बन जाता और धर्म के नाम पर भिन्नता नहीं होती।

वास्तव में जो धर्म था, उससे कुछ हटकर, विचारों को लेकर एक सम्प्रदाय बना फिर उस सम्प्रदाय के स्थापित होने पर भी संतुष्टि नहीं हुई और महापुरूष ने फिर कुछ और उसमें कम किया या उससे हटकर जोड़ दिया तो फिर एक नया सम्प्रदाय बन गया। इस प्रकार धर्म के साथ अपने–अपने सुझावों व विचारों को जोड़कर, पूर्व के सम्प्रदाय की कुछ बातों का समर्थन या विरोध करके नए–नए सम्प्रदायों का जन्म होता रहा है और यह कम अभी भी जारी है।

अनेक मजहबों की स्थापना से यह तो सिद्ध है कि पूर्व के मजहब की सिद्धान्तों से सहमति होती तो दूसरे, तीसरे, चौथे सम्प्रदायों का जन्म नहीं होता। किन्तु सहमति न होने के कारण, वैचारिक भिन्नता के कारण भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों का जन्म होता गया। यह भी सत्य है यदि सभी सम्प्रदायों के विचार एक होते पूर्ण रूपेण धर्म के अनुसार होते तो, फिर न तो सम्प्रदायों का जन्म होता, न विवाद होते, न धर्मान्तरण जैसी कोई स्थिति बनती।

धर्म सूई का कार्य करता है, जो सबको संगठित करता है, धर्म शाश्वत है, सनातन (हमेशा से था हमेशा रहेगा) है, सर्वकालिक है, सबके लिए है, निष्पक्ष है, पूर्ण है, जीवन का आधार है। संसार के सभी मानवों का

thearyasamaj.org

धर्म एक है। क्योंकि सृष्टि के प्रारंभ में परमात्मा ने ही यह ज्ञान हमें दिया था। परमात्मा एक है इसलिए धर्म भी एक है सम्प्रदायों के जनक अनेक हैं इस कारण सम्प्रदाय भी अनेक है। परमात्मा एक होने से उसका ज्ञान धर्म भी एक है सम्प्रदाय के जनक अनेक होने से उनका ज्ञान भी अलग–अलग है। अलग–अलग विचारों को मानने में और फिर उनको आगे बढ़ाने के कारण ही समाज में टकराव व दूरियां बढ़ती हैं।

सम्प्रदायिक ज्ञान के मानने वालों की संख्या साम्प्रदायिकता की दृष्टि से कई भागों में विभाजित है, हिन्दू, मुस्लिम, सिख्ख, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध आदि, किन्तु धर्म को मानने वालों को बांटा नहीं जा सकता। जो धर्म को मानने वाले हैं, उन्हें एक ही धार्मिक नाम कह कर सम्बोधित किया जाता है। धर्म के टुकड़े नहीं किए जा सकते, न धर्म को जाति, सम्प्रदाय, देश, काल, के नाम पर बांटकर पहचान दी जा सकती हैं, न धर्म परिवर्तनशील है, धर्म तो इन सबसे ऊपर है।

जैसे समाज में ज्ञानी, दयालू, सेवक, धनवान का पद जाति, सम्प्रदाय या भौगोलिक सीमाओं से बन्धा नहीं है। किसी भी जाति, सम्प्रदाय या देश का व्यक्ति उपरोक्त किसी भी सम्बोधन से पुकारा जा सकता है। ठीक इसी प्रकार धार्मिकता वही है जिसमें धर्म के लक्षण पाए जावें। धर्म के लक्षणों में धैर्यता, क्षमा, आत्मिक नियन्त्रण, चोरी न करना, पवित्रता (शारीरिक व आत्मिक) कर्मेन्द्रिय व ज्ञानेन्द्रिय नियन्त्रण, विद्या, सत्याचरण, क्रोध न करना ये लक्षण बताए हैं।

जब संसार में जातिवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता नहीं थी, सारे संसार के मानवों की एक जाति थी, तब विश्व प्रसिद्ध विद्वान आचार्य मनु ने यह विचार श्लोक के द्वारा ऐसे प्रकट किया था –

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

संसार का कोई भी व्यक्ति किसी भी मजहब को मानने वाला, किसी भी देश का निवासी, किसी भी समय का व्यक्ति उपरोक्त बातों का खण्डन नहीं कर सकता। क्योंकि ये समस्त बातें मानवीय कल्याण के लिए मानव मात्र के लिए हैं, किसी व्यक्ति, विचारधारा या सम्प्रदाय का खण्डन नहीं करती।

धर्म की परिभाषा को और सरल देखना है तो महाभारत रचयिता आचार्य व्यास की इन पंक्तियों को देखें जो धर्म के सार को कुछ शब्दों में ही व्यक्त कर देती हैं –

thearyasamaj.org

श्रुत्वा धर्म सर्वस्व श्रुत्वा चावधार्यताम्।
आत्मानः प्रतिकूलानी परेषां न समाचारेत्।।

अर्थात – धर्म बताता है जो अपनी आत्मा को जो व्यवहार अच्छा नहीं लगता वैसे दूसरों से मत करों और जो व्यवहार अपने को अच्छा लगता है जैसा हम अपने साथ दूसरों के बर्ताव को चाहते हैं वैसा व्यवहार दूसरों से करो। इसका संसार में कोई विरोध नहीं कर सकता, यह सर्वमान्य है।

क्या सम्प्रदाय कें मानने वाले इस बात को मान रहे हैं ? नहीं मान रहे हैं इसीलिए विपरीत परिणाम सामने हैं। धर्म से सुख–शान्ति, संगठन बढ़ता है जो आज नष्ट होते जा रहा है। धर्म का स्थान सम्प्रदायों ने ले लिया। सम्प्रदाय अपनी संख्या बढ़ाने को अपना लक्ष्य मानकर संसार में अपने सम्प्रदाय का वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं और वे इसे ही अपना अज्ञानतावश धर्म मान रहे हैं। इसलिए लोभ, लालच, धोखा, षड़यन्त्र, भय, हिन्सा को आधार बनाकर अपनी संख्या वृद्धि अधर्म से भरे कार्यों को करके भी करने में लगे हैं। किन्तु धर्म समाज को श्रेष्ठता प्रदान करता है, मनुष्य को मनुष्य बनाता है, धोखा, हिन्सा, असत्य, भय से दूर, प्रेम से रहने का तथा संगठन का सन्देश देता है।

धर्म से किसी को कोई हानि नहीं है, सर्वे भवन्तु सुखिनः का पवित्र ज्ञान धर्म देता है।

दुर्भाग्य से धर्म जो आचरण का विषय है, उसे बाहरी चिन्हों तक हमने सीमित कर दिया। आचरण के स्थान पर ईंट, पत्थर की दिवारों से बने मन्दिर, पूजा पद्धति मस्जिद, गिरजाघर को, टोपी, दाढ़ी, तिलक, रंगों को धर्म समझ लिया। बाहरी दिखावे को ही धर्म मानने के कारण धर्म की आत्मा का बहिष्कार करके धर्म के नाम पर अपने गुटों को जो सम्प्रदाय हैं, उन्हें मान्यता दी जा रही है। यही विवाद का मूल है। काश संसार के सभी व्यक्ति धर्म के पक्के अनुयायी बनने का प्रयास करें तो यह धरती स्वर्ग हो सकती है। हिन्सा, भेदभाव, ईश्वर व धर्म के नाम पर फैली नफ़रत का अन्त हो सकता है।

धर्म को समझकर अपनाने से ही लाभ है और केवल भावनात्मक दृष्टि से मानना विशेष लाभदायक नहीं है और इसी में कुछ ऐसी बातों को भी धर्म के नाम पर मान लिया जाता है, जो वास्तव में धर्म के विपरीत होती है। आचार्य मनु ने इसीलिए कहा **"यस्त तर्केण अनुसंधन्ते, सः वेद नेतरः।"** अर्थात धर्म को ज्ञान की कसौटी पर कसकर जांच परख के फिर अपनाना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने लिखा – **"सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।"** दुर्भाग्य से धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार की कोई चर्चा या संवाद अथवा उसके संबंध में तर्क करना महान अपराध माना जाता है और यह

thearyasamaj.org

धर्म के ठेकेदारों ने समाज के दिमाग में बैठा रखा है। इसलिए धर्म का आचरण ज्ञानमय न होकर रूढ़ियों, परम्पराओं और भावनात्मक विचारधारा से बंधा हुआ है। इसलिए यह सारे विवाद का कारण बना हुआ है अन्यथा धर्म तो इतना पवित्र कर्म है जो मनुष्य की तो छोड़ों पशुओं को भी पीड़ा पहुंचाने में गलत कहता है।

धर्म के नाम पर फैली हुई अज्ञानता व विविधता को नष्ट करने के लिए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विक्रम संवत् 1931 में दिल्ली दरबार के समय यह प्रयास किया था कि सारे सम्प्रदाय के लोग एकत्रित होकर अपने–अपने सम्प्रदाय की अच्छाईयां कहें जिन मुद्दों पर एकता हो, उन्हें सब मानें और जिन पर विरोधाभास हो तो प्रमाणों के आधार पर उस पर विचार करके निर्णय किया जा सकता है। किन्तु लकीर के फकीर बनें कुछ सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने सत्य के स्थान पर जो परिपाटी चली आ रही है, उसे ही महत्व देने पर अड़े रहे, इस कारण से महर्षि का प्रयास सफल न हो सका।

विचारों की दृष्टि से अनेकता में एकता नहींहोती है विचारों की एकता में ही एकता होती है। इसलिए संसार के उस ज्ञान को जिसे सब मानें जो सबके हित में हो निष्पक्ष हो तथा पूर्ण हो ऐसे धर्म को मानना चाहिए और वह धर्म केवल परमात्मा का हो सकता है जो वेदों के माध्यम से सृष्टि के प्रारंभ में चार ऋषियों के माध्यम से परमात्मा ने प्रदान किया है।

आज सारा विवाद धर्म के लिए नहीं धर्म के नाम पर और तथाकथित विचारों के लिए हो रहा है। इसलिए धर्म के नाम पर अधर्म भी करने में कोई पाप नहीं समझते।

1901 में दिल्ली में एक सर्व सम्प्रदायों की बैठक हुई उसमें धर्म पर ही चर्चा की गई उस पर अनेक विद्वानों ने मतावलंबियों ने अपने अपने विचार रखे। सर्वानुमति से धर्म की एक परिभाषा बनाई वह है।

Dharma wich hold and binds the member of comunity to gather. धर्म वह जो सबको एक सूत्र में बान्ध कर संगठित करता है। किन्तु यह धर्म से संभव है, साम्प्रदायिकता से नहीं।

इसलिए सम्प्रदाय के स्थान पर धर्म को मान्यता देना चाहिए। इन पंक्तियों को कुछ इस तरह पढ़ें – **धर्म नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।**

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है; आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि के विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

– **आर्य समाज**

thearyasamaj.org

बोधकथा –

सिर्फ भाग्य भरोसे नहीं

"आंधी तूफान में ईश्वर से प्रार्थना तो करो, किन्तु अपनी पतवार लगातार चलाते रहो।

यूरोपीय कहावत

एक नदी का बॉध टूट जाने के कारण उसका पानी पास के गोव में पहुंचने लगा। पानी पहुंचने से गांव में चारों ओर हाहाकार मच गया। सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए गांव से बाहर भागने लगे।

उसी गांव के बाहर भगवान का एक मन्दिर था। जिसमें उस वक्त तीन ब्राह्मण पूजा कर रहे थे। गांव के कई आदमी उनके पास पहुंचे और बोले – पण्डित जी। गॉव में नदी का पानी शीघ्रता से आ रहा है, आप तीनों जल्दी से इस मन्दिर से निकलो और हमारे साथ बाहर निकल कर यहां से दूर चलिए।

इस पर उन पण्डितों ने कहा – अरे, हम लोग भगवान के भक्त हैं, तुम लोग अपनी चिन्ता करो, हम लोगों को भगवान बचाने आयेगें, क्योंकि भगवान पर हम तीनों का बहुत भरोसा है।

कई आदमियों ने उन पण्डितों को समझाने की कोशिश की, तो उन तीनों ने उन्हें फटकार कर वहां से भगा दिया।

कुछ ही देर बाद जल का स्तर बढ़ने से पानी मन्दिर के अन्दर आने लगा। तब वे तीनों पण्डित उस मन्दिर की छत पर जा बैठे।

अब तक सूचना मिलने से तमाम राहतकर्मी मोटर बोटों से आ पहुंचे तथा जो लोग उस वक्त तक किसी कारण से भाग नहीं सके थे और अपने–अपने घरों की छतों पर बैठे थे, उनको मोटर बोट के जरिए बाहर ले जाने लगे।

तभी एक मोटर बोट के राहतकर्मी की नजर मन्दिर की छत पर बैठे उन पण्डितों पर पड़ी। उस राहतकर्मी ने अपनी मोटर बोट उस मन्दिर के समीप ले जाकर रोक दी फिर उन तीनों को मोटर बोट में बैठने का निर्देश दिया। किन्तु उन तीनों ने उस मोटर बोट में बैठने से साफ इन्कार कर दिया और बोले – तुम अपनी मोटर बोट यहां से ले जाओ, तुम्हारे पीछे ही हमारे भगवान अपने जलयान से स्वयं आयेगें और हमें बचा लेगें। भगवान पर हमें पूरा भरोसा है।

धीरे–धीरे पानी का स्तर बढ़ रहा था। कुछ ही देर में उन तीनों का छत पर रहना मुश्किल हो गया था, क्योंकि पानी उस छत के उपर पहुंचने लगा था। इसलिए वे तीनों पण्डित मन्दिर की चोटी पर चढ़ गये।

तभी बचाव कार्य में लगे एक हेलिकाप्टर के पाइलेट की नजर में वो तीनों दिखे। उसने हेलिकाप्टर को उन पण्डितों के सामने रोका और कहा – हरी अप!

thearyasamaj.org

आप तीनों जल्दी से हेलिकाप्टर की इस सीढ़ी द्वारा अन्दर आ जाईये। पर वे तीनों नहीं माने और बोले, तुम यहां से निकलो ! तुम्हारे पीछे ही अभी हमारे भगवान अपने यान से आयेगें और हम तीनों को बचा लेगें, क्योंकि हम तीनों को उन पर पूरा भरोसा है।

थोड़ी देर बाद पानी उस चोटी के उपर निकल गया और वो तीनों पण्डित उस जल में डूबकर मर गये। मरकर जब वे भगवान के पास पहुंचे तो तीनों गुस्से से लाल–पीले हो गये।

भगवान ने पूछा कि – तुम तीनों मेरे पे इतना लाल–पीले क्यों होते हो ?

इस पर उन पण्डितों ने कहा – भगवान ! लाल–पीले होने की बात ही है, आप पर कितना भारी विश्वास था। आपने हम लोगों के साथ घोर विश्वासघात किया है। आगे से आप पर पृथ्वीवासी विश्वास करना बन्द कर देगें।

भगवान ने बड़े ध्यान से उनकी बातों को सुना फिर अपनी गम्भीर आवाज में बोले – अरे मूर्खों। तुम्हारे गांव के कई व्यक्तियों, राहतकर्मियों और पाइलेटों को किसने भेजा था ? जब तुम मेरे बनाए इन्सान का विश्वास नहीं करते तो इसमें मेरा भला क्या होगा ? यदि तुम तीनों बुद्धि प्रयोग करके मेरी भेजी सहायता को पहचानते तो इस समय जीवन का आनन्द ले रहे होते। याद रखो भगवान स्वयं कोई कार्य नहीं करते वह अपने भक्तों का कार्य करवाने के लिए साधन भेजते हैं। कार्य तो इन्सान को स्वयं ही करना होगा।

"भगवान या भाग्य उन्हीं की मदद करता है, जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।"

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। कृपया इसे पत्रिका को प्रत्येक परिवार में अवश्य बुलावें।

विशेष–बार–बार निवेदंन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

thearyasamaj.org

विदिशा की माटी के गौरव एवं आर्यवीर
भारत के शान्ति दूत : कैलाश सत्यार्थी

जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व में शान्ति की अलख जगाई कैलाश सत्यार्थी, आर्य समाज के सजग प्रहरी ''सत्यार्थ प्रकाश'' से प्रेरणा लेकर निरन्तर बचपन बचाओ कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए, आज विश्व के 144 देशों में काम कर रहे हैं। उनके अग्रज श्री जगमोहन शर्मा बताते हैं कि कैलाश सत्यार्थी को आर्य समाज से जुड़कर काफी प्रेरणा मिली। श्री बाबूलाल आर्य उनके गुरू थे, उन्हीं से उन्होंने आर्य समाज की शिक्षा–दीक्षा ली थी। बाद में बड़े आर्य समाजियों से जुड़कर आन्दोलन को व्यापक रूप दिया। आर्य समाज ने व्याप्त परंपराओं को भी सुधारने का प्रयास किया, और ''वर्तमान सौन्दर्य में आर्य समाज की भूमिका'' पुस्तक लिखकर आर्य समाज के महत्व को प्रतिपादित किया। यह पुस्तक विदिशा के ही प्रेस ''लोक शिखर'' से प्रकाशित हुई और दिल्ली में आयोजित आर्य समाज के सम्मेलन में उसकी प्रतियां बांटी गई थीं। कैलाश सत्यार्थी के भाई बताते हैं आर्य समाज और लोहिया आन्दोलन से जुड़ने के बाद उनके अनुज कैलाश शर्मा के विचारों में काफी बढ़त आई। उन्होंने आर्य समाज की ज्वलन्त समस्याओं को उक्त पुस्तक में उठाया। यह पुस्तक काफी चर्चा में रही। इसी पुस्तक के शीर्षक के चलते उनका नाम कैलाश शर्मा से कैलाश सत्यार्थी पड़ गया। समाजवादी नेता मधुलिमये से भी इनका संपर्क रहा।

अन्तर्राष्ट्रीय नोबेल शान्ति पुरस्कार के लिए चयनित विदिशा की माटी से जुड़े कैलाश सत्यार्थी को यह पुरस्कार कड़ी मेहनत तथा ईमानदारी तथा आर्य समाज की प्रेरणा से किए गए प्रयास की बदौलत मिला है। सत्यार्थी का मानना है कि बच्चों को गरीबी या उपेक्षा के कारण मजदूरी में नहीं धकेला जा सकता, बच्चों से नियोक्ता मजदूरी कराते हैं, क्योंकि इससे उन्हें लाभ पहुंचता है। ऐसे कारोबारियों को पर्याप्त मजदूरी या काम करने का अच्छा माहौल देने की जरूरत नहीं होती। असल में सत्यार्थी ने अपने स्कूल के पहिले ही दिन एक बच्चे को अपनी कक्षा से उन्होंने अपनी जिन्दगी बालाश्रम के खिलाफ लड़ने को समर्पित कर दी। बाल मजदूरी पर रोक लगाते कानून भले ही दुनिया भर में लागू हो गए हों, लेकिन यह समस्या अब भी मौजूद है, सत्यार्थी इस बारे में पूरी तरह जागरूक हैं।

आर्थिक रूप से तंग बच्चो को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर समाज के उस तबके को कैलाश सत्यार्थी ने उठाने का प्रयास किया जो कमजोर है। बचपन अचाओ आन्दोलन के जनक सत्यार्थी ने आल मजदूरी और बाल दासता जैसी सामाजिक बुराई के खिलाफ भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर में संघर्ष किया जो बदस्तूर जारी है। उन्हीं के शब्दों में ''मेरी फिलॉसफी यह है कि मैं बच्चों का मित्र हूं। मैं नहीं समझता कि किसी को उन्हें दया या चैरिटी का पात्र समझना चाहिए। लोग प्रायः बच्चों जैसे व्यवहार को मूर्खता से जोड़ते हैं। यह मानसिकता बदलने की

thearyasamaj.org

जरूरत है। मैं इस अन्तर को खत्म करके ऐसा वातावरण बनाना चाहता हूं, जहां मैं बच्चों से सीख सकूं। पारदर्शिता ऐसी चीज है जो मैं बच्चों से सीख सकता हूं। वे निर्दोष व सीधे सच्चे होते हैं और उनके मन में भेदभाव की भावना नहीं होती। मेरे लिए वे सरलता का ही दूसरा रूप हैं। मुझे लगता है बच्चों से मेरी मित्रता में दूसरों की तुलना में अधिक गहरा अर्थ है।

और अन्त में उनके ही अग्रज जगमोहन शर्मा के दोहे के शब्दों में –

प्रतिभाशाली जिन्दगी, छिपती नहीं छिपाए।
कैसा भी हो वस्त्र पर, आग न बांधी जाए।।

संकलन – **ठा. जगन्नाथसिंह वर्मा**
एवं **सुरेन्द्रसिंह जादौन**
विदिशा

श्राद्ध और तर्पण

श्रद्धा से जो कर्म करते हैं श्राद्ध उसी को कहते हैं,
वेदविहित पितरों की तृप्ति को तर्पण ही कहते हैं।।

वृक्ष पहाड़ और नदी समुन्दर की सेवा ना तर्पण है।
किन्तु सुश्रुषा सेवा जो जीवित पितरों की तर्पण है।
वेद विरूद्ध जो चले पाखण्डी पथ से भ्रमित वो करते हैं।।
श्रद्धा से जो..........

जीवित मात–पिता की सेवा ही सच्चा तर्पण और श्राद्ध
इसी में निहित है सत्यव्रती फल जो है ईश्वर से ही प्राप्त,
बिन श्रद्धा के किये धर्म कर्म सदा ही निष्फल रहते हैं।।
श्रद्धा से जो..........

मृत्यु बाद तो मात–पिता को देह विहिन ही पाया है
फिर भोजन अच्छादन कैसा जब उनकी ना काया है
अकल के अंधे बनो कभी ना ज्ञानी जन ये कहते हैं।।
श्रद्धा से जो..........

तिरस्कार ना करो कभी भी मात–पिता ऋषि आचार्यों का
प्राप्त करो आशीश प्रेरणा लाभ हो उनके सहकार्यों का
हृदय सदा निष्काम हैं जिनके दो निःस्वार्थ ही रहते हैं।।
श्रद्धा से जो..........

गीतकार, कवि – **ललित साहनी**, मुम्बई

thearyasamaj.org

बस्तियां खाली हो रही इंसानों से

बस्तियां खाली हो रही इंसानों से,
बस रहीं है, अब शैतानों से।
जो मुखोटों से भरी भीड़ से आबाद हैं,
हर शख्स कुछ भी करने को आजाद है।
रक्षक–भक्षक, योगी–भोगी हैं बने,
शहरों के बीच भी कई जंगल हैं घने।
घृणित चरित्र वाले भी सन्त बन पुजा रहे,
शोषक, चापलूस, भ्रष्ट, चहुंओर नजर आ रहे।

इन्सानियत का बदल गया स्वरूप।
मानवीय आकृति हुई कुरूप।।
कहने को ये इंसान नाम से मशहूर हैं,
पर, हकीकत में इन्सानियत से दूर हैं।।
सेवा स्वार्थ में बदल गई,
नैतिकता बातों तकं रह गई।
आस्था कीमतों पर तौली जाती है,
अब, बागड़ ही फसल को खाती है।।

हिंसा, शोषण, धूर्तता का बोलबाला है,
सब हैं स्वच्छन्द, नहीं कोई कहने वाला है।
धर्म के मर्म को त्याग, दिखावा अपनाया है,
स्वार्थ ने, धर्म का किया छलावा है।।
कहीं धर्म व्यापार और शोषण का ठिकाना है,
क्या सही, क्या गलत, नहीं किसी ने यह जाना है।
धर्म को बदनाम कर रहे कुछ बहरूपिये,
कहां तक गिरेगी मानवता, जरा इस पर भी सोचिये।
धर्म तो संसार का एक है,
इससे कुछ भी नहीं नेक है।

गुरु भी सबका वही है एक परमात्मा,
नकली गुरूओं से नहीं होती, पवित्र आत्मा।
इसीलिए बढ़ रहा पाप शैतानों से,
बस्तियां खाली हो रही इंसानों से।।

– प्रकाश आर्य, महू

thearyasamaj.org

आर्य समाज गुंजोटी में भवन का उद्घाटन एवं हुतात्मा वेदप्रकाश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

गुंजोटी उद्घाटन के अवसर पर जनसमूह

व्याख्यानमाला को संबांधित करते प्रोफेसर अखिलेश शर्मा

निपानिया में दीप प्रज्वलित करते हुए

ओ३म् ध्वजारोहण करते हुए

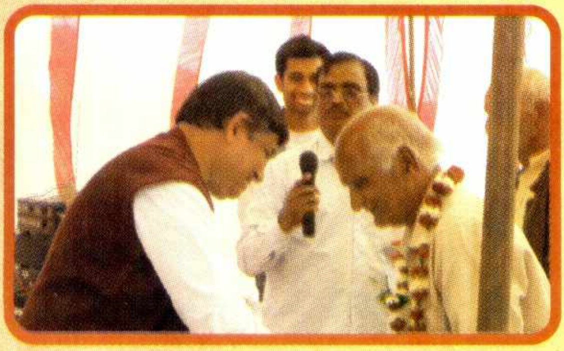

दानदाताओं का स्वागत करते हुए

thearyasamaj.org

निपानिया में नए भवन का शिलान्यास

विदिशा में नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

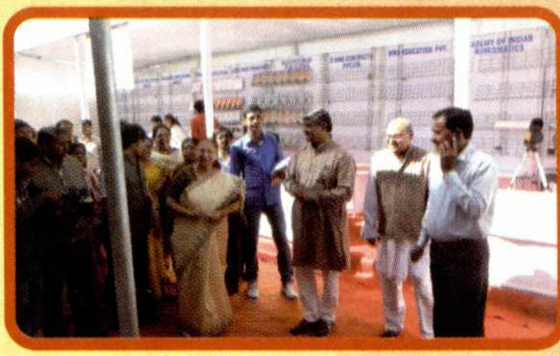

इन्दौर में आयोजित पुस्तक मेले का शुभारंभ एवं लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन द्वारा निरीक्षण

उज्जैन में कार्यशाला को संबोंधित करते हुए एवं श्रोता आर्यजन

आर्य समाज विदिशा का 96 वॉ वार्षिकोत्सव का दृश्य

thearyasamaj.org

अवश्य पढ़ियेगा ....

दयानन्द यदि देह है तो वेद उनकी आत्मा है.

दयानन्द नाम की याद आते ही उनके साथ एक और नाम की याद स्वतः हो आती है, वह नाम है वेद। दयानन्द यदि देह हैं तो वेद उनकी आत्मा है। यह सब मैं इसलिए कह रहा हूं कि - दयानन्द से पूर्व वेदों की यह स्थिति न थी जो आज है। वेद संस्कृत-साहित्य के विशाल अम्बार की सबसे निचली तह में पड़े थे। जीवन लीला समाप्त हो जाती थी, उस तक किसी की पहुंच ही न हो पाती थी। इस स्थिति को दयानन्द ने एक ही दृष्टि में भांप लिया। दयानन्द का वर्चस् जागा और उसने एक ही झटके में सब स्थिति को पलट दिया। जो ऊपर था वह नीचे हो गया और जो नीचे था वह ऊपर आ गया। परिणामतः दयानन्द के हाथ सर्वप्रथम वेद लगे। वेद क्या हाथ लगे मानो सच-झूठ की कसौटी हाथ लग गयी। दयानन्द ने उद्घोष दिया कि - वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, जो इस पर खरा उतरे, उसे ले लो शेष सब छोड़ दो। व्यर्थ के व्यामोह में न पड़ो। इस प्रकार का कथन दयानन्द के ज्ञान का मथा हुआ मक्खन था। सवा सौ वर्ष पूर्व इस प्रकार की उक्ति के लिए अत्यन्त साहसपूर्ण चिन्तन और आत्मविश्वास की आवश्यकता थी। ऋषि दयानन्द ने वेद के लिए जो कुछ किया है उस ऋण से अनृण होना संभव नहीं। वेद नाम में जो इतनी शक्ति भर गई है, उसे जो गौरव प्राप्त हुआ है, जो तेजस्विता राष्ट्रीय मानस में पुनः प्रतिष्ठित हुई है उस सबका श्रेय महर्षि दयानन्द को है।

वेदों का अस्तित्व तो दयानन्द से पूर्व भी था, परन्तु उस तक पहुंच किसी की नहीं थी। मध्यकालीन आचार्यों में एक भी ऐसा नहीं था जो वेदों तक पहुंचा हो। चाहे आचार्य शंकर हो, मध्व हो, निम्बार्क हो या रामानुज, सबकी पहुंच उपनिषद, गीता और वेदान्त दर्शन तक थी। उनके मतों का आधार ये ही तीन ग्रंथ रहे। जिन्हें प्रस्थानत्रयी के नाम से स्मरण किया जाता है, वेदत्रयी को छोड़कर प्रस्थानत्रयी को अपनाया। दयानन्द ने प्रस्थानत्रयी को छोड़कर वेदत्रयी को अपनाया। यही आर्य परम्परा थी। इसी कारण दयानन्द को वेदोद्धारक अथवा वेदों वाला उपाधि से याद किया जाने लगा। वेदों वाला कहते हैं एकमात्र जो व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है, वह है दयानन्द।

प्रस्थानत्रयी के भी उस पार जो वेदों का लहराता हुआ समुद्र है, वहां तक पहुंचने के लिए जो बीच की खाई थी उसके पार जाने का कौशल और आग्रह दयानन्द ने ही किया। वशिष्ठ, विश्वामित्र, वामदेव, गौतम, भारद्वाज, भृगु, अंगिरा आदि महर्षियों और यज्ञवल्क्य, जैमिनी, शौनक, यास्क आदि आचार्यों की तेजस्वी परम्परा के विषय में ब्रह्मा से दयानन्द पर्यन्त कहने का साहस कर सकते हैं। कोई कारण नहीं कि जैमिनी पर ही रुका जावें।

– पं. शिवकुमार शास्त्री, श्रुति सौरभ

thearyasamaj.org

आर्य समाज के बलिदानी

स्वामी श्रद्धानन्द

कोई व्यक्ति बुरी राहों पर चलकर भी यदि जीवन को सुधारने का प्रबल संकल्प कर ले, तो वह कल्याण मार्ग का पथिक बन सकता है, इस युक्ति को चरितार्थ करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द का बचपन का नाम मुंशीराम था। उनके पिता लाला नानकचन्द मूलतः पंजाब के निवासी थे, किन्तु उत्तर प्रदेश की पुलिस सेवा में रहने के कारण उनके जीवन का अधिकांश भाग वाराणसी, बरेली, बदायूँ, मिर्जापुर आदि नगरों में व्यतीत हुआ। मुंशीराम का जन्म 1854 में अपने पिता के ग्राम तलवन (जिला जालंधर) में ही हुआ, किन्तु उनकी शिक्षा मुख्यतः काशी में हुई। अपने किशोर काल में वे कट्टर पौराणिक थे। बिना विश्वनाथ शिव का दर्शन किये अन्न जल भी ग्रहण नहीं करते थे। किन्तु मूर्ति पूजा से उन्हें अचानक विरक्ति हो गई। हुआ यह कि काशी के विश्वनाथ मंदिर में रीवा की महारानी जब दर्शनार्थ गई तो सामान्य भक्तों को मन्दिर में घुसने ही नहीं दिया गया।

धर्म के नाम पर की जाने वाली प्रायः इसी प्रकार की घटनाएँ अन्दर के पट खोल देती है। तब दिखावे के पाखण्ड आदमी को नास्तिक बना देते हैं। फिर मुंशीराम तो सूझबूझ के धनी तरूण थे। ऐसे भगवान की भक्ति कैसे करते, जिसे राजा–रानी के आने पर देखने का अधिकार भी न हो ? मुंशीराम की विरक्ति ने भी यही गुल खिलाया। यूरोप के नास्तिक दर्शनों तथा डार्विन के विकासवाद के अध्ययन ने उनके हृदय में बची खुची आस्तिकता की भावना को भी सर्वथा निर्मूल कर दिया। उस समय वे अपने पिता के पास बरेली में रहते थे।

1879 के वर्ष में स्वामी दयानन्द का बरेली में आगमन हुआ। पिता को तो पुलिस व्यवस्था के नाते स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनना था, परन्तु वही प्रवचन का जादू सिर चढ़के बोल गया। उन्होंने पुत्र मुंशीराम को भी आग्रह करके भेज दिया।

नास्तिक मुंशीराम पिताजी के कहने पर बुझे मन से स्वामी जी के उपदेशों को सुनने के लिए चले जाते हैं, जहां उनकी सारी नास्तिकता दूर हो जाती है। स्वामी जी के प्रवचनों को सुनकर मुंशीराम का मानो पुर्नजन्म हो जाता है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा में उन सभी दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा अभद्र आदतों का स्पष्ट विवरण दिया है, जिनके कारण उनका जीवन पतन की सीमा तक पहुंच गया था। ऋषि दयानन्द के संसर्ग ने मुंशीराम के जीवन की धारा को बदल दिया। वे उन सभी बुराईयों से मुक्ति पा गए जिनके कारण उनका जीवन नरक बन गया था।

1881 में मुंशीराम लाहौर आए और कानून की पढ़ाई में लग गए। इसी नगर में पहले वह ब्रह्म समाज के सम्पर्क में आए, किन्तु उनकी धार्मिक एवं आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का पूरा समाधान, आर्य समाज में आकर ही हुआ। दयानन्द के महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से उनकी अनेक शंकाओं का निवारण हुआ। तब वे विधिवत् आर्य समाज के सदस्य बन गए।

वह युग आर्य समाज के इतिहास का स्वर्णिम काल था। पं. गुरूदत्त, लाला लाजपतराय और लाला हंसराज जैसे जीवनदानी युवाओं ने, वैदिक धर्म की सेवा

thearyasamaj.org

का व्रत लेकर आर्य समाज में प्रवेश किया था। मुंशीराम भी इसी मित्र मण्डली के एक महत्वपूर्ण सदस्य रहे।

लाला मुंशीराम का सामाजिक जीवन सक्रिय रूप से जालंधर में आरंभ हुआ। वहां वे वकालात करने लगे थे। आर्य समाज जालंधर ने शीघ्र ही उन्हें अपना प्रधान निर्वाचित कर लिया। वे नियमित रूप से व्याख्यानों, सत्संगों तथा शास्त्रार्थों के द्वारा आर्य समाज के प्रचार में संलग्न हो गए। मुंशीराम जी की धर्म–प्रचार के लिए लगन अपूर्व थी। वे समय निकालकर समीपवर्ती कस्बों और नगरों की आर्य समाजों के उत्सवों में जाते, वहां व्याख्यान देते और यदि आवश्यकता पड़ती तो विधर्मियों से शास्त्रार्थ भी करते। पं. दीनदयालु जैसे प्रसिद्ध पौराणिक विद्वान से शास्त्रार्थ के मंच पर टक्कर लेकर, उन्हौंने अपना अध्ययन तथा वाक्चातुरी का सिक्का जमाया। यह सब उन्होंने अपने स्वयं–उपार्जित धर्मग्रंथों के स्वाध्याय से ही किया।

किन्तु मुंशीराम के व्यक्तित्व को तो अभी स्वरूप लेना था। प्रारंभ में वे स्वामी दयानन्द की स्मृति में लाहौर में स्थापित किये गए डी. ए. वी. कॉलेज की संचालन व्यवस्था में सहभागी रहे। थोड़े समय बाद उन्हें यह अनुभव हो गया कि इस शिक्षा प्रणाली में, संस्कृत भाषा और वैदिक एवं आर्ष शास्त्रों क अध्ययन को, अंग्रेजी की तुलना में गौण स्थान दिया जा रहा है। तब उनके मन में ऋषि दयानन्द द्वारा उपदिष्ट, गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को मूर्तरूप देने का विचार आया।

मनस्वी लोग जब किसी विचार को हृदय में ले आते हैं, तो उसे क्रियान्वित करने में भी देर नहीं करते। जैसे ही गुरूकुल–स्थापना का विचार लाला मुंशीराम के मन में आया, उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से उसे स्वीकार करा लिया। यह प्रतिज्ञा करके घर से निकल पड़े कि जब तक गुरूकुल के लिए एक निश्चित धनराशि वे एकत्र नहीं कर लेगें, तब तक अपने नगर में लौटकर नहीं आऐगे। सचमुच दृढ़व्रती थे मुंशीराम। अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में थोड़ी भी कठिनाई नहीं हुई। वे निश्चित अवधि के पूरा होने से पहले ही, संकल्पित राशि से भी अधिक धन एकत्र कर लाए।

इस प्रकार मार्च 1902 में गंगा के किनारे कांगड़ी ग्राम में गुरूकुल आरम्भ हुआ। महात्मा मुंशीराम ने अपने तप, त्याग, श्रम और लगन से, इस गुरूकुल को देश के एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाई। पुरातन भारतीय शिक्षा प्रणाली को मूर्त रूप देने के लिए, जिस संस्था को एक नन्हें पौधे के रूप में आज से 92 वर्ष पूर्व रोपा गया था, वह कालान्तर में नाना शाखा–प्रशाखाओं से युक्त होकर, एक महान वृक्ष का रूप ले सकी। कालान्तर में, अन्य मत–सम्प्रदायों के लोगों ने भी जब अपनी शिक्षण संस्थाएं स्थापित की, तो उन्होंने भी गुरूकुल के आदर्शो को ही न्यूनाधिक रूप में स्वीकार किया।

गुरूकुल शिक्षा की एक विशेषता, उसके छात्रों में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति के भावों को भरना भी था।

जब गुरूकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों ने स्वदेश हित को सर्वोपरि मानकर, लोक–कल्याण के कार्यक्रमों को अपनाया, तब तत्कालीन ब्रिटिश शासकों के मन में, गुरूकुल को लेकर अनेक प्रकार के सन्देह पनपने लगे। महात्मा मुंशीराम नहीं चाहते

thearyasamaj.org

थे, कि शासकों की वक्र दृष्टि से गुरूकुल को व्यर्थ में ही हानि हो, अतः उन्होंने तत्कालीन वायसराय लॉर्ड चैम्सफोर्ड तथा संयुक्त प्राप्त के गवर्नर सर जेम्स मैस्टन को गुरूकुल में आमन्त्रित किया और उन्हें वास्तविकता से परिचित करा दिया।

शीघ्र ही वैदिक आश्रम–व्यवस्था के अनुसार महात्मा मुंशीराम ने सन्यास की दीक्षा ले ली। मुंशीराम से वह स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। स्वामीजी का सार्वजनिक जीवन, केवल आर्य समाज तक ही सीमित नहीं था। देश की आजादी के आंन्दोलनों में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। महात्मा गांधी तथा उनके कार्यों से तो वे तभी परिचित हो गए थे, जब बैरिस्टर मोहनदार गांधी दक्षिण अफ्रिका को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर, प्रवासी भारतीयों की सेवा कर रहे थे। जब महात्मा गांधी ने सत्याग्रह और असहयोग का कार्यक्रम देशवासियों को दिया, अपनी आहुति देने को स्वामी श्रद्धानन्द आगे आए।

30 मार्च 1919 को जब दिल्ली की जनता का नेतृत्व करते हुए, वे चॉदनी चौक से घण्टाघर में पहुंचे, तो गोरखा पलटन के सिपाहियों ने उन्हें अपनी संगीनों का लक्ष्य बना लिया। यह वीर सन्यासी के तेजोद्दीप्त मुखमण्डल तथा उनकी निर्भीक वाणी का प्रभाव ही था कि वे उद्दण्ड सैनिक उन पर गोली का प्रहार करने का साहस नहीं जुटा सके।

स्वामी श्रद्धानन्द की राष्ट्र के प्रति की गई सेवाओं का उल्लेख संक्षेप में किया जाना भी संभव नहीं है। जलियावाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब पंजाब में राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया जाना प्रायः असम्भव था, उस समय अमृतसर में सफलतापूर्वक राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन सम्पन्न करा लेना और उसके स्वागताध्यक्ष के पद से प्रथम बार हिन्दी में स्वागत भाषण प्रस्तुत करना, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे स्वाधीनचेता महापुरूष के लिए ही संभव था।

यद्यपि स्वामीजी पूरी तरह राष्ट्रीयता के रंग में रंगें हुए थे, किन्तु वे यह भी अनुभव करने लगे थे कि कांग्रेस की साम्प्रदायिक तुष्टिकरण की नीति, आगे चलकर देश के व्यापक हित में बाधक सिद्ध होगी। फलतः उन्होंने काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से दिये गए मौलाना मुहम्मद अली के भाषण के, उस अंश का दृढ़तापूर्वक विरोध किया जिसमें मौलाना ने सात करोड़ अछूतों को हिन्दू समाज को संगठित नहीं किया जाता, और हिन्दू धर्म को त्यागकर अन्य मतों को स्वीकार करने वालों के लिए हिन्दू धर्म के द्वार पुनः नहीं खोल दिये जाते, तब तक भारत का राष्ट्रीय हित भी संभव नहीं है। इसी विचार को लेकर स्वामीजी ने शुद्धि और संगठन पर जोर दिया। महामना मदनमोहन मालवीय के साथ उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्यक्रमों में भी रूचि दिखाई। अब वे अछूतोद्धार के प्रमुखता देने लगे। कुछ वर्ष पूर्व स्लाम ग्रहण करने वालों को पुनः हिन्दू समाज में प्रविष्ट कराने का अभियान चलाया।

कट्टरपंथी मुसलमान स्वामीजी के शुद्धि और संगठन के इस कार्यक्रम से घबराहट अनुभव कर रहे थे। जो अत्यन्त मदान्ध किस्म के लोग थे, उन्होंने स्वामीजी की हत्या करने का षड़यन्त्र रचा। इसी के परिणामस्वरूप 23 दिसम्बर 1926 को अमर, धर्मवीर, स्वामी श्रद्धानन्द ने बलिदान का मार्ग अपनाया और कर्तव्य की वेदी पर स्वयं को न्यौछावर कर दिया।

thearyasamaj.org

भाई परमानन्द

जिस समय अत्याचारी मुगल बादशाह औरंगजेब ने सिखों के नवें गुरू तेग बहादुर को निर्ममतापूर्वक दिल्ली में कत्ल करवाया था, उस समय उनके साथ पंजाब के एक ब्राह्मण मतिदास का शरीर आरे से चिरवाकर, उसे भी गुरू महाराज के साथ धर्म की वेदी पर बलिदान कर दिया था। जब दशम गुरू गोविन्दसिंह को इन बलिदानों के समाचार मिले, तब उन्होंने मतिदास के वंशजों को भाई कहकर पुकारा, क्योंकि गुरू तेग बहादुर के साथ एक सहोदर भाई की तरह मतिदास ने भी अपने प्राण न्यौछावर किये थे। तब से उस ब्राह्मण मतिदास के वंशज भाई के सम्बोधन से ही पुकारे जाने लगे। मुहियाल ब्राह्मणों के इसी पवित्र वंश में भाई परमानन्द का जन्म 1876 में हुआ। उनके पिता भाई ताराचन्द जेहलम जिले के कटियाला ग्राम के निवासी थे।

भाईजी की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही हुई। उसके बाद वे चकवाल के मिडिल स्कूल में भर्ती हुए। उनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से उन्होंने बी.ए. किया और कलकत्ता के प्रसीडेन्ट कॉलेज से इतिहास में एम. ए. किया।

भाई के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब उन्हें पूर्वी अफ्रिका में आर्य धर्म के प्रचारार्थ भेजे जाने का प्रस्ताव आया। सम्भवतः वे आर्य समाज के प्रथम प्रचारक थे, जो अफ्रिका महाद्वीप में बसे प्रवासी भारतीयों के अनुरोध पर वहां गए। 1906 में उनका यह प्रथम विदेश–प्रवास हुआ। मोम्बासा, नैरोबी, जोहान्सबर्ग, नेटाल आदि स्थानों में धर्म–प्रचार करने के उपरान्त वे डर्बन पहुंचे। उन दिनों महात्मा गांधी बैरिस्टर के रूप में, अफ्रिका में प्रवासी भारतीयों का हितचिन्तन करते हुए, उनके नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। भाईजी ने महात्माजी से भेंट की। उनके सेवा भाव तथा समर्पणशील व्यक्तित्व से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। गांधीजी से उनका मैत्री–भाव जीवन–पर्यन्त रहा।

1908 में भाई परमानन्द स्वदेश लौट आए। पहले की भांति वे डी.ए.वी. कॉलेज तथा आर्य समाज के कार्यों में लग गए। 1909 में वे दक्षिण भारत में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ निकले। विभिन्न स्थानों पर जाकर सामाजिक जागृति का शंखनाद किया।

22 फरवरी 1925 को भाईजी को "लाहौर षड़यन्त्र अभियोग" में बन्दी बना लिया गया। अभियोग का निर्णय करने के लिए एक विशेष न्यायिक ट्रिब्यूनल का गठन किया गया, जिसके दो अंग्रेज तथा एक भारतीय सदस्य थे। अनुमान तो यह था कि भाईजी को फॉसी का दण्ड दिया जाएगा, किन्तु ट्रिब्यूनल के भारतीय

thearyasamaj.org

सदस्य के आग्रह पर उन्हें अजन्म कारावास की सजा हुई। वे कालापानी भेज दिये गए। इस भीषण दण्ड को भोगते हुए उन्हें कैसी–कैसी अमानुषिक यातानाएं झेलनी पड़ी इसका रोमांचक वर्णन स्वयं भाईजी ने अपनी आत्मकथा में किया है। महात्मा गांधी और भारत–भक्त एण्ड्रूज के प्रयत्नों से 1930 में उन्हें कालापानी से रिहा कर दिया गया। वर्षों बाद वे स्वदेश लौटे। उस समय देश में महात्मा गांधी द्वारा चलाए जाने वाले असहयोग आन्दोलन का जोर था। सरकारी स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार किया जा रहा था। स्वदेशी भावना को प्रोत्साहन देने के लिए स्थन–स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किये जा रहे थे।

लाहौर में जब महात्मा गांधी की प्रेरणा से नेशनल कॉलेज खोला गया तो भाई जी को इसका प्रिंसिपल पद दिया गया। अमर शहीद भगतसिंह ने भी इसी कॉलेज में भाईजी से देश भक्ति का पाठ पढ़ा था। असहयोग के साथ–साथ महात्मा गांधी ने खिलाफत की तहरीक का समर्थन कर, मुसलमानों का राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग लेने का प्रयास किया, किन्तु जब टर्की में कमाल पासा ने सत्ता संभाली और खिलाफत का सपना चूर–चूर हो गया, तो देश में साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़क उठी।

उस समय मुस्लिम साम्प्रदायिकता के तूफान का मुकाबला करने के लिए, स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि तथा हिन्दू–संगठन पर बल दिया। लाला लाजपत राय तथा मदनमोहन मालवीय जैसे हिन्दू निष्ठावाले नेताओं ने "हिन्दू महासभा" को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया।

1931 में वे केन्द्रीय असेम्बली के लिए चुन लिये गए। 1934 में अजमेर में आयोजित हिन्दू महासभा के अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिए भाईजी को चुना गया। इस पद से अपना भाषण देते हुए उन्होंने देश की राजनैतिक परिस्थिति का लेखा–जोखा किया। हिन्दू महासभा को सुदृढ़ बनाने के लिए समस्त देश का भ्रमण किया। 1935 में महासभा की अध्यक्षता के लिए जब बर्मा के बौद्ध भिक्षु उत्तम को चुना गया, तो यह सिद्ध हो गया कि हिन्दू महासभा केवल उच्च वर्णों के हिन्दुओं का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती, अपितु इसमें बौद्ध, जैन, सिख आदि उन सभी समुदायों का स्वागत है जो हिन्दू नाम को व्यापक अर्थ में स्वीकार करते हैं, तथा जिनकी आर्य संस्कृति में आस्था है।

1937 में जब वीर सावरकर को काला पानी से रिहाई मिली, तो उन्हें भी हिन्दू महासभा में आने के लिए कहा गया।

इस बीच देश की राजनैतिक स्थिति में अनेक परिवर्तन आए। अन्ततः 15 अगस्त को देश को अधूरी आजादी मिली। इस समय तक भाईजी भी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बहुत क्षीण और दुर्बल हो गए थे। 8 दिसम्बर 1947 को उनका निधन हो गया। उन्होंने अविभाजित भारत की स्वतन्त्रता की आशा की थी, जो सफल नहीं हुई।

thearyasamaj.org

आर्य समाज निपानिया कलां में आर्य समाज भवन हेतु शिलान्यास

भोपाल संभाग में सिहोर से 10 किलो मीटर दूर ग्राम निपानियाकलां में नए आर्य समाज भवन हेतु दानदाता एवं ग्राव वासियों ने एक बेद का कार्यक्रम दिनांक 23/11/2014 को आयोजित किया, जिसमें ग्राम के सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में सभा मन्त्री श्री प्रकाश जी द्वारा ओ3म् ध्वज का ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर यज्ञ भी किया गया। यज्ञ श्री रजनीश पंवार भोपाल द्वारा करवाया गया।

सभामन्त्री जी द्वारा सभा को संबोधित किया गया और आर्य समाज के कार्य और वैदिक विचारधारा से ग्राम वासियों को अवगत कराया। इसके पश्चात ग्राम वासियों ने भवन हेतु आर्य समाज को दान देने की घोषणा की। श्री प्रभुलाल और बालमुकुन्दजी दोनों भाईयों ने आर्य समाज भावन निर्माण के लिए भूमि दी, जिसका साईज 320 बाय 35 फिट है, सामने रिक्त भूमि है तथा गांव में आने–जाने का शासकीय मुख्य मार्ग पक्की सड़क है। इसके अतिरिक्त दोनों भाईयों ने 11,000–11,000 की राशि भी दी, भोपाल संभाग के उपमन्त्री श्री कमलेश याज्ञिक के द्वारा 15 हजार रूपया, श्री रामप्रकाश चौधरी 11 हजार, म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 11 हजार, मण्डी आर्य समाज से 11 हजार, सिहोर आर्य समाज 11000, बाबूलाल झंवर 10,000, श्री शिवनारायण जी झलावा 51,000 की घोषणा भी की। इसके अतिरिक्त अन्य सभी महानुभावों ने अपना योगदान भवन निर्माण हेतु देने की घोषणा की। कुल दान राशि लगभग 2,65,000 हो गई। इसके अतिरिक्त प्लाट मिलने पर लगभग 1 लाख रूपया लगाकर उसके नींव व कॉलम खड़े कर दिए गए।

इस अवसर पर श्री दक्षदेव गौड़, विजयसिंह वर्मा, डॉ. अजय झलावा, संजय जामनिया, रजनीश पंवार, सन्तोषसिंह आर्य समाज सिहोर, भगवतसिंह जी खामखेड़ा, जगमोहन कौशल, अजय खोकर इच्छावर एवं महू से श्री राधेश्याम बियाणी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री कमलेश याज्ञिक ने किया।

आर्य समाज विदिशा का 96 वॉ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

आर्य समाज विदिशा का 96 वॉ वार्षिकोत्सव दिनांक 12 से 14 दिसम्बर तक मनाया गया। कार्यक्रम के अवसर पर ही लगभग 20 लाख रूपयों की लागत से बने बड़े हॉल का उद्घाटन किया गया। जिसका नाम वैदिक सत्संग भवन रखा गया। उत्सव में अभूतपूर्व उत्साह था, दोनों सत्रों में उपस्थिति बड़ी संख्या में अत्यन्त सन्तोषजनक रहती थी।

सार्वदेशिक सभा एवं प्रान्तीय सभा का प्रतिनिधित्व श्री प्रकाशजी आर्य द्वारा किया तथा अपने वक्तव्य में आर्य समाज की उपलब्धि, मान्यता और आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

thearyasamaj.org

इस अवसर पर विदिशा विधायक श्री कल्याणसिंह एवं शमशवाद के विधायक श्री सूर्यप्रकाश मीणा उपस्थित थे, दोनों ने आगामी निर्माण हेतु कमशः 2,50,000 एवं 5,00,000 की घोषणा भी की, कार्यकम में स्थानीय अनेक प्रबुद्ध नागरिक उपस्थित हुए।

विद्वानों में श्री स्वामी सर्वानन्द जी, संभाग के उपप्रधान राममुनीजी, श्री वेदप्रकाशजी श्रोत्रिय, सुश्री अंजलि आर्या, गंजबासौदा के सूर्यप्रकाश आर्य एवं अन्य भजन गायक व वाद्य वादक पधारे थे।

श्री दिनेश वाजपेयी का विशेष सहयोग इस कार्यकम की सकियता व व्यवस्थित रूप देने में रहा। मैंने यथायोग्य सहयोग दिया, श्री सीताराम जी पटेल, सुरेन्द्रसिंहजी गुप्त (प्रधान), केदारनाथ चौरसिया (मन्त्री), वेदप्रकाश आर्य, अनुपम जौहरी, विशेलन्द आर्य आदि का बहुत सहयोग रहा। कार्यकम अभूतपूर्व रहा।

जगन्नाथसिंह आर्य

विदिशा

आर्य समाज नान्द्रा का 21 वॉ वार्षिक यज्ञोत्सव

1 जनवरी से 5 जनवरी 2015 तक

आर्य समाज नान्द्रा द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार हेतु दिनांक 1 से 5 जनवरी 2015 तक कार्यकम आयोजित किया गया है। यह कार्यकम समस्त ग्रामवासी एवं अन्य महानुभावों के सहयोग से विगत 20 वर्षों से निर्विघ्न सम्पन्न हो रहा है।

कार्यकम :

नवनिर्मित भवन का उद्‌घाटन

दिनांक 1/1/2015 प्रातः 8.30 बजे

प्रतिदिन प्रातः 8.30 से 11 तक यज्ञ, भजन, प्रवचन

दोपहर 3 से 5 तक भजन, प्रवचन

रात्रि 8 से 10.30 तक भजन, प्रवचन

दिनांक 5 जनवरी को दोप. 12 बजे पूर्णाहुति व समापन समारोह

आमन्त्रित विद्वान –

डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुम्बई, श्री प्रकाश आर्य, महू, भजनोपदेशक पं. श्री अमरसिंहजी वाचस्पति, ब्यावर, श्री काशीराम जी अनल कानड़, श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री (उपदेशक–म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल)।

thearyasamaj.org

पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य विक्रय

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा इन्दौर में आयोजित पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य विक्रय हेतु स्टॉल लगाई गई। यह मेला दिनांक 6 से 14 दिसम्बर 2014 तक आयोजित था। बड़ी मात्रा में पुस्तकों की बिक्री हुई। यह समस्त साहित्य व्यवस्था आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सहयोग से की गई। सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य हजारों व्यक्तियों तक इस माध्यम से पहुंचा।

सभा द्वारा निर्मित सामग्री प्राप्त कीजिए

		कीमत
0	आर्य समाज की उन्नति में बाधक कारण और उनका निदान कैसे ? (आर्यों के लिए)	10/–
0	आकर्षक प्रचार–प्रसार की दृष्टि से विभिन्न 12 प्रकार के वाक्यों के स्टीकर	02/–
0	छोटी–सी जेब में रखने योग्य आकर्षक संध्या पुस्तिका अर्थ सहित प्रचारार्थ व भेंट करने के लिए अत्यन्त उपयोगी।	05/–

कोई भी वस्तु 100 लेने पर 20% कीमत में छूट।

आर्य समाज व वैदिक विचारों के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से अत्यन्त सरल भाषा में लिखी पुस्तकें 0 आर्य व आर्य समाज का संक्षिप्त परिचय 0 समझो तो क्या है आर्य समाज और क्या है समाज को इसकी देन ? 0 धर्म के आधार वेद क्या हैं ? 0 मनुष्य पैदा नहीं होता बनना पड़ता है। 0 ईश्वर से दूरी क्यों ? प्राप्त कर प्रचार कार्य को प्रगति दीजिए।

प्राप्ति स्थल :– मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय
टी. टी. नगर, भदभदा रोड, भोपाल (म. प्र.)

0 आर्य समाज, महर्षि दयानन्दगंज, इन्दौर
.0 आर्य समाज, लुनियापुरा, महू
0 आर्य समाज, जवाहर नगर, रतलाम
0 आर्य समाज, उज्जैन

> जिस भूमि पर हमारा जन्म हुआ, जिसकी धूल में खेलकर बड़े हुए उसकी हवा, पानी, अन्न से जीवन पोषित हुआ, हमारा कर्तव्य है, उस मातृभूमि की रक्षा करें, उसकी उन्नति में सहयोगी बनें। — **महर्षि दयानन्द**

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र में ऐतिहासिक आर्य समाज भवन का उद्घाटन

महाराष्ट्र जिला उस्मानाबाद ग्राम जमोटी आर्य जगत का एक ऐतिहासिक स्थल है। हैदराबाद निजाम के अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाने वालों में अनेक व्यक्तियों का बलिदान हुआ। इस बलिदान की श्रृंखला में महाराष्ट्र का पहला बलिदान ग्राम गुंजोटी में नवयुवक वेदप्रकाश का हुआ था। इस कारण पूरा क्षेत्र इस बलिदान से प्रभावित रहा है। पहले यह ग्राम हैदराबाद के अन्तर्गत था।

इसी ग्राम में एक मन्दिर था जिस पर मुसलमानों ने जोर जबरदस्ती करके कब्जा कर लिया और उसे मस्जिद बना लिया था। इसकी लड़ाई वर्षों आर्य समाज ने लड़ी और अन्त में उच्चतम न्यायालय के निर्णय से वह मन्दिर सनातन धर्मियों को दिलवाया गया। इसी मन्दिर को आर्य समाज मन्दिर का रूप दिया गया और बड़ा भव्य निर्माण किया गया, जिसके उद्घाटन समारोह के अवसर पर तीन दिवसीय यज्ञ और व्रवचन व्याख्यान का आयोजन किया गया था।

इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्दजी सभाप्रधान, श्री प्रकाशजी आर्य (मन्त्री–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)), डॉ. ब्रह्ममुनि, पूज्य स्वामी धर्मानन्दजी, श्री काशिनाथ कदेरे सचिव, श्री दयाराम बसैया, डॉ. नैनकुमार, जोगेन्द्रसिंह चौहान, राधेश्याम बियाणी म. प्र. और पूरे प्रान्त के सैकड़ों आर्य महिला पुरूष इसमें सम्मिलित हुए।

यज्ञ ब्रह्मा एवं वक्ता डॉ. धर्मवीर जी (कार्यकारी प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर) तथा सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि स्वरूप मन्त्री उपस्थित रहे।

प्रान्तीय प्रशिक्षण सूचना

आर्य समाज में पुरोहित व संस्कार करवानें वालों की कमी को दृष्टिगत रखते हुए सार्वदेशिक सभा ने शीघ्र ही नवयुवकों को प्रशिक्षित कर आर्य समाजों में पुरोहितों के रिक्त पदों को पूर्ण करने का निर्णय लिया है और वह कार्य प्रारंभ होने जा रहा है। 12 वीं कक्षा तक अध्ययन किए हुए। 30 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति इसमें भाग ले सकते हैं। इच्छुक व्यक्ति अपना नाम, पता, उम्र और शैक्षणिक योग्यता के अतिरिक्त अन्य कोई योग्यता है तो मेरे निम्न पते **(प्रकाश आर्य, आर्य समाज, महू)** पर भेजें। यह प्रशिक्षण 2 से 3 माह का होगा। प्रशिक्षण के पश्चात योर्ग्यतानुसार शीघ्र ही किसी आर्य समाज या विद्यालय में नियुक्ति की जावेगी। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें – **मोबा. 09826655117**

thearyasamaj.org

इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, भोपाल संभाग की कार्याशाला सम्पन्न

ऐसा न सुना था, न देखा था, बहुत वर्षों बाद जो हुआ वह काफी पहले होना था। दिनांक 7 दिसम्बर 2014 को उज्जैन में सम्पन्न कार्यशाला में उपस्थित सदस्यों को अपनी कमियों का, अपने स्वर्णिम अतीत का और अपने कर्तव्यों का जो एहसास हुआ, वह एक यादगार बन गया।

आर्य समाज की स्थापना क्यों की गई थी, आर्य समाज ने क्या किया, समाज की पहचान क्यों थी, अब कैसे बनाएं और आगे क्यों आवश्यकता है। इस पर और हमारी क्या कमियां रहीं, उन ठोस तथ्यों पर सवा दो घण्टे से अधिक तक निरन्तर, अबाध रूप से चर्चा पहले सत्र में हुई, पहलीबार यह चर्चा सभा मन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य के द्वारा की गई।

चर्चा के दौरान हमारी कार्य करने की शैली कैसी हो, आंतरिक रूप से परिवार व मित्र जनों को कैसे तथा बाहरी समाज को कैसे जोड़े, यह सब विस्तार पूर्वक बताया। इस विषय पर दूसरे सत्र में लगभग डेढ़ घण्टे यही चर्चा की गई। इससे प्रचार का एक मार्ग समझ में आया जो लाभकारी होगा।

कार्यशाला में आर्य समाज उज्जैन का पूरा हॉल श्रोताओं से भरा था, 110 से अधिक उपस्थिति थी, इसमें इन्दौर, उज्जैन, रतलाम व भोपाल संभाग की समाजों के प्रधान व मन्त्री तथा संभागीय उपप्रधान व उपमन्त्री उपस्थित थे। श्री भगवानदासजी अग्रवाल, श्री गोविन्द आर्य, श्री लक्ष्मीनारायण आर्य व श्री राजेन्द्र जी व्यास ने कार्यक्रम को सराहते हुए और भी दृढ़ता से कार्य करने का कहा।

कार्यक्रम में भाषण नहीं था अपितु एक सत्य जो सबके लिए मनन करने योग्य था। वहां जो चर्चा हो रही थी प्रत्येक सदस्य उसके महत्व को समझकर बहुत गंभीर मुद्रा में सुन रहा था। ऐसा पहली बार देखा। इस कार्यशाला को जिसमें यथार्तता का परिचय था, कर्तव्य बोध था, व्यर्थ की बातों का भाषण में कोई स्थान नहीं था व सभी ने सराहा और एकमत से कहा यह पहलीबार हुआ, ऐसा तो काफी पहले होना था। निश्चित रूप से ऐसे प्रयास आर्य समाज के लिए वरदान सिद्ध होगें।

– **दक्षदेव गौड़** (उपमन्त्री – इन्दौर संभाग)

वेद कथा एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज पीपल्यामण्डी जिला मन्दसौर के तत्वावधान में दि. 29 दिसम्बर से 4 जनवरी 2015 तक सात दिवसीय वेद कथा एवं 51 कुण्डीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम किया जा रहा है। कार्यक्रम की सफलता के लिये पण्डित सत्यपालजी सरल, देहरादून एवं कर्नाल से भजनोपदेशिका अंजलि आर्या की स्वीकृति मिल गई है। इस भव्य आयोजन के लिये प्रधान वेदप्रकाश आर्य एवं मन्त्री भोलाराम आर्य अपनी टीम के साथ इस आयोजन की तैयारी में जुटे हुए हैं। आयोजन का संचालन बंशीलाल आर्य करेगें। उक्त जानकारी पुरोहित सत्येन्द्र आर्य ने दी।

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-7106